लोकगीत

डॉ0 आशा
निर्देशेक
एसों0 प्रोफे0
इतिहास विभाग
कुमारी मायावती गवर्नमेन्ट गर्ल्स पी0जी0 कॉलिज, बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर)

दीपा वर्मा
शोधार्थी
एम0फिल0
यू0जी0सी0 नेट, जे0आर0एस0
कुमारी मायावती गवर्नमेन्ट गर्ल्स पी0जी0 कॉलिज, बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर)
Email:deepaverma2606@gmail.com

सारांश

लोकगीत उन लोगो के जीवन की अनायास प्रयाहात्मकता की अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत या सुरम्य प्रभावो से बाहर रहकर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते है। लोक गीत मानव मन की सहज, स्वच्छंद अभिव्यक्ति है। भावावेग मन में बादल की भांति उमड़ना हैं, फिर वर्षा की भीनी–भीनी फुहार की भांति अधरों से बरसते है। लोकगीत जीवन को सरसता से अभिभूत कर देते है। लोक गीत से मानव अपने मन की भावनाओं विचारों को नया रूप देकर अभिव्यक्त करता हैं। जिसमें अनेको गीत स्वयं ही रचित हो जातें है जो मानव मन अभिभूत कर जाते है। लोक गीत सृष्टि के सृजन से ही झरने की भांति स्वच्छंन्द गति से प्रवाहित होकर अविराम अनवरता झरते रहे है ममत्व से भरकर शिशु को सुलाते समय अधरों से लोरी गीत अनजाने में ही रच गये होंगें, आस्था से भरकर मंदिर की ओर जाते समय, प्रकशति के अनुठे सौन्दर्य को देखकर, घर में आयोजित किसी शुभ अवसर पर खेतों में ओसाई, निराई, बुआई, कटाई करते समय उमंग और उत्साह से भरकर जबग मानव गुनगुना उठता है तो लोकगीतो की सृष्टि होती है। लोक साहित्यकारों ने लोक गीतो की विभिन्न स्वरूपों मे परिभाषा किया है। कुंज बिहारी का कथन है लोकगीत उन लोगो के जीवन की अनायास प्रयाहात्मकता की अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत या सुरम्य प्रभावो से बाहर रहकर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते है लोकगीतों में लोक संस्कृति का चित्रण अनिवार्य रूप से होता है। क्योंकि उन्ही में जन–जीवन का प्रतिबिम्बित होता है।

प्रस्तावना

लोकगीत मानव मन की सहज, स्वच्छंद अभिव्यक्ति है। भावावेग मन में बादल की भांति उमड़ना हैं, फिर वर्षा की भीनी–भीनी फुहार की भांति अधरों से बरसते है। लोकगीत जीवन को सरसता से अभिभूत कर देते है। मांगलिक अवसर हो अथवा धार्मिक अनुष्ठान, ऋतु हो अथवा त्योहार ढ़ोलक की थाप, मंजीरे की खनक के साथ नारी कलकंठो से निःसृत लोकगीतों की

कड़ियां वातावरण को मधुरता से भर देती है इनमें लालित्य है, मिठास है, रस ही रस है और है अपने सम्मोहन ने बांध लेने की क्षमता है। इनके लिए कोई शास्त्रीय विधान नही, ये स्वयम् ही रच जाते है।''[1] मानव मन की इच्द्रधनुषी भावनाएं इनमें झलक उठती है। हर्ष विषाद, जय–पराजय, आशा–निराशा, आस्था, निष्ठा, संवेदना जीवन की हर भावना इनमें मुखरित हो उठती है। ये मानव को एक सूत्र में बांध देते है। कब किस युग में रचना हूई, यह कहना असंभव है। सृष्टि के सृजन से ही झरने की भांति स्वच्छंन्द गति से प्रवाहित होकर अविराम अनवरता झरते रहे है ममत्व से भरकर शिशु को सुलाते समय अधरों से लोरी गीत अनजाने में ही रच गये होंगें,[2] आस्था से भरकर मंदिर की ओर जाते समय, प्रकृति के अनुठे सौन्दर्य को देखकर, घर में आयोजित किसी शुभ अवसर पर खेतों में ओसाई, निराई, बुआई, कटाई करते समय उमंग और उत्साह से भरकर जबग मानव गुनगुना उठता है तो लोकगीतों की सृष्टि होती है। इनका रचियता भी लोककवि होता है। गाता भी लोक गायक है और इनकी रचना भी लोक के लिए होती है।[3]

लोकगीतों में लोकमंगल, लोक का सुख–दुख, लोकोत्सव और लोक की आंकाक्षा की अभिव्यंजना होती है। लोक मानस की प्रतिबिम्ब है ये लोकगीत। लोक में प्रचलित लोक द्वारा रचित एवम् लोक के लिए लिखे गीतो को लोक को समर्पित कर देता है एन्साइक्लोपिड़िया ब्रिटानिया में नाम व्यक्ति हीन रचना को परंपरा के प्रवाह में बहने वाला गीत कहा गया है।''[4]

लोकगीत आदि युग से ही समाज में प्रचलित है। एक पुरातन वृक्ष की भांति जिसकी जड़ें अतीत में है और साखाएं पुष्पित–पल्लवित होकर आज भी लहलहा रही है और मानव को उत्साह उमंग सें आपूरित कर रही है। ये हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा की भांति है। विद्धानों ने लोकगीतों को स्वतः प्रसूत, स्वंयभू आदि मानव की कल्पना की उपज कहा है''[5] –कुंज बिहारी वास का कथन है–

''लोकगीत उन लोगो के जीवन की अनायास प्रयाहात्मकता की अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत या सुरम्य प्रभावो से बाहर रहकर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते है।''[6]

डॉ0 सदाशिव कृष्ण फड़के ने लोकगीतो को लाकमानस के तरंगावित रूप से निःसश्त काव्य रूप माना है–उनका मानना है–

शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भुत करता है, वह लोकगीत है।''[7]

ये मौखिक परंपरा में ही चलते रहे। इनका रचियता अज्ञात होता है। परन्तु फिर भी लोकमानस से तादात्म्य स्थापित करके एक व्यक्तित्व विहिन कविता की सृष्टि करके यह सिद्ध करता है कि उसमें एक व्यकित्त्व के स्थान पर लोक व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया होती है।''[8] इसलिए समस्त जन समूह (लोक) उसे अपनी रचना मानने लगता है और वही गीत लोक का गीत हो जाता है। उसे हम लोकगीत की संज्ञा देते है। ये निबंध होते है। इनके लिए साहित्य के नियमों, शास्त्रीय संगीत के विधान की कोई अनिवार्यता नही। ये तो मानव के उद्गार है तो संगीतात्मककता

लिए हुए स्वतः अभिव्यक्त हो उठते है। लोकसाहित्य विशेषज्ञयों ने लोकगीतों की अनेक परिभाषाएं दी है–

ड़ॉ0 श्याम परमार का मानना है कि लोकगीतों को इनकी नैसर्गिकता के लिए जाना जाता है–उनका कहना है–

''गीतो में विज्ञान की तराश नही, मानव संस्कृति का सारल्य और व्यापक भावों का उभार है। भावों की लडियां लम्बे–लम्बे खेतों–सी स्वच्छ, पेडों की नंगी ड़ालो की अनगढ़ और मिट्टी की भांति सम्य है।''[9]

''कला साहित्य के अंग है पर लोकगीत परम्परां, अनुभूति ओर अनुष्ठान सें संबंधित है।''

लोकगीतों में मानव की अनुभूतियों की अभिव्यंजना होती है। मानव का भाव–संकुल ह्रदय ही इनमें प्रतिबिम्ब होता है। जब जनमानस आन्दोलित हो उठता है तो लोकगीतों की रचना होती है। ड़ॉ0 श्याम परमार ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है–[10]

''लोकगीत का सृजन संगीत के माध्यम से लोरंजक होकर पंरपरा में सम्मिलित होने के क्रम में व्यष्टि और समष्टि के भेद को नष्ट करे देता है। किसी व्यक्ति विशेष द्वारा निर्मित कोई गीत जनमानस को आन्दोलित कर उसके स्वन्दन के स्तरों में मेल खाने लगे और कालान्तर में उसी भांति अथवा थोड़े परिवर्तन के साथ जीवित रहे तथा निरंतर प्रयोग मे आते रहे तो वह गीत लोक–गीत ही कहलाएगा। उसे लोकगीत की संज्ञा अतिहास और प्रयोग के सहारे प्राप्त होगी। मूल में कोई गीत नही कहा जाएगा। परिस्थितिवश समाज में अनुष्ठानिक अथवा औपचारिक मूल्य पाकर विशेष संस्कृति की पृष्ठभूति में ही वह लोकगीत बनता है।''[11]

लोकसाहित्य के प्रति समर्पित विद्धान रामनरेश त्रिपाठी लोकगीतों को ग्रामगीत कहते थे, उनका कथन है–

''ग्रामगीत प्रकृति के उद्‌गार है। इनमें अलंकार नही केवल रस है। छन्द नही केवल लय है। लालित्य नही केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री–पुरूषो के मध्य में ह्रदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकशति के वे की गान ग्रामगीत है।''[12]

ग्रामगीत का जन्म स्थान गांव है। जिनकी वाणी मस्तिक नही ह्रदय है, निके विनय के परदे में छल नही पश्चाताप है, निकी मैत्री के फूल में स्वार्थ का कीट नही प्रेम का पररिमल है, जिनके मानस जगत् में आनन्द है, सुख है, करूणा, संतोष है, त्याग है, क्षमा है, विश्वास है, उन्ही ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री पुरूषों के बीच में ह्रदय नामक सिहासन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे ही गान ग्रामगीत है। वेदों की तरह भी अपौरूषेय है।''[13]

त्रिपाठी जी ने लोकगीत के लिए ''ग्रामगीत' शब्द का प्रयोग किया है।

उन्होने लोकगीतों में प्राप्त रसानुभूति कर विशेष बल दिया है। ड़ॉ वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी लोकगीतों में प्राप्त रसकलश की ओर मुग्ध होकर निम्न विचार व्यक्त किये है–

''नीले आकाश के नीचे प्रकृति के बहुरंगी परिवर्तन, युद्ध और शान्तिमय जीवन के चित्र एवं विधाता की स्त्री संज्ञक रहस्यमयी सृष्टि की माननीय जीवन पर प्रसाद और विषादमयी छाया–ये इन गीतो के प्रधान विषय है जो शतकोटि कंठो से सहस्त्रों बार गाये जाने पर भी पुराने

नहीं पड़ते और जिनकी सतत किलकारी वायु में भरे हुए चिंरतन स्तर की तरह सर्वत्र सुनायी पड़ती है। गीत गानो कभी न छीजने वाले रस के सोते है। ये कंठ से गाने के लिए और हृदय से आनन्द लेने के लिए है।''[14]

लोकगीतों में लोक संस्कृति का चित्रण अनिवार्य रूप से होता है। क्योंकि उन्ही में प्रतिबिम्बित होता है। जन–जीवन। इस संबंध में देवेन्द्र सत्यार्थी का सार गार्वित वाक्य है–

''लोकगीत किसी संस्कृति के मुंह बोले चित्र हैं।''[15]

डॉ0 राम खेलावन पांडेय ने कहा है–

जो आत्मीयता, आत्मनिष्ठता और संवेदनशीलता में है वह शास्त्रीय काव्य विधान में नही है। लोकगीतों में काव्यत्व का अभाव मानने वाले काव्य की कृत्रिमता को ही महत्वपूर्ण मान बैठते है। कला यदि रागात्मक क्षणों की आवेशपूर्ण अभिव्यक्ति है, ग्रामगीत निश्चय ही कलात्मक है। उनमें भावना और संगीतात्मकता का समन्वय है।''[16]

लोकगीतों में निहित है हमारी परंपराएं, देवी देवताओं के प्रति आस्था, मानव के प्रति संवेदना, प्रकृति असीमित प्रू, जीवन के हर पल, हर क्षण का उंमग से भर जीवन जीने की ललक। इनमें रची बसी है हमारी संस्कृति।

किसी भी शुभ अवसर की शुरूआत क्षेत्रीय भजनों से की जाती है जिनमें स्थानीय भाषा में ईश्वर की आराधना की जाती है। ये भजन लोक संस्कृति के अनुठे प्रतिबिम्ब है जो स्थानीय लोगों के जीवन के प्रत्येक अवसर पर उनके ईश्वर के प्रति विश्वास को प्रदर्शित को प्रर्दशित करते है''[17] कुछ प्रमुख भजन निम्न है–

श्री कृष्ण के सरंक्षक स्वरूप का बड़ा ही मनमोहक वर्णन इस भजन में किया गया है। जहाँ वे अर्जुन को कुरूक्षेत्र में विजय पद की ओर अग्रसर करते है। द्रौपदी की चीर बढ़ा कर उसके सतीव की रक्षा करते है। ओर गरीब नरसिंह की पुत्री के विवाह में भात भरते है।

नंद की गैया चराते रह गये।
श्याम बंसी को बजाते रह गय।।
बहस पांड़वो में हुई थी जिस घड़ी।
श्याम अर्जुन को जिताते रह गये।।
नंद की गैया चराते रह गये।
श्यात बंसी को बजाते रह गये।।
चीर द्रौपदी का उतार जिस घड़ी।
श्याम साड़ी को बढ़ाते रह गये।।
नंद की गैया चराते रह गये।
श्याम बंसी को बजाते रह गये।।
भात नरसिंह ने भरा जिस घ़डी।

श्याम दौलत को लुटाते रह गये।।
नंद की गैया चराते रह गये।
श्याम बंसी को बजाते रहे गये।।

.....

इस भजन में मोहन अर्थात श्रीकष्ष्ण को पुकारते हुए भक्त कह रहे है कि मोहन शीघ्र आओ हम तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है और हमें इस संकट से उबारों जैसे अर्जुन, मीरा और दौपदी

मोहन खोली के राजा।
आजा क्यों देर लगाई।।
मोहन तेरी अर्जुन देखे बाट
मोहन वाकी जीत कराजा।
आजा क्यों देर लगाई।।
मोहन खोली के राजा।
आजा क्यों देर लगाई।।
मोहन तेरी मीरा देखे बाट।
मोहन विष अमृत बना जा,
आजा क्यों देर लगाई।।
मोहन तेरी द्रोपदी देखे बाट।
मोहन वाका चीर बढ़ा जा,
आजा क्यों देर लगाई।।
मोहन खोली के राजा।
आजा क्यों देर लगाई।।
मोहन तेरी नरसिंह देखे बाट।
मोहन वाका भात भरा जा,
आजा क्यों देर लगाई।।
मोहन खोली के राजा।
आजा क्यों देर लगाई।।

.....

इस भजन में गायक स्वयं को मूर्ख पापी कहते हुए पश्चाताप करता है कि उसका जीवन व्यर्थ ही चला गया।

मैं मुरख गया सोय।
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
मेरी रै पड़ोसन झोल्ली से बलावै।

चलो बहन सत्संग में ,
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
सारा तो बहना काम पड़ा है
भूखा है परिवार,
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
मैं पापी गया सोय,
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।
जब तक तेल दिये में बाती
जगमग–जगमग होय,
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
मैं मुरख गया सोय।
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
जल गया तेल सपड़ गयी बाती।।
घोर अंधेरा होय लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।
मैं पापी गया सोय,
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
मैं मुरख गया सोय।
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
जब तक प्राण रहे इस घट में।।
मेरा ही मेरा होय,
लुट गये ज्ञान के मोती।
जब ये प्राण गये मरघट में।
ले चल ले चल होय
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
मैं पापी गया सोय,
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
मै मुरख गया सोय।
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
ब्रज घाट में चिता चिनाई।
चिता चिनाई और अग्न लगाई
जल भुन ढ़ेर होय,

लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।
मै पापी गया सोय,
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।
में मुरख गया सोय।
लुट गये गुरू ज्ञान के मोती।।

.....

खड़ी हूँ दर पे दर्शन को,
चरण शिव जी के छुने को
अगर जल चढ़ाती हूं
तो मछली का झूझा है।।
इसलिए पैर नही पड़ते
तेरे मंदिर में आने को।।
खड़ी हूँ दर पे दर्शन को,
चरण शिव जी के छुने को।।
अगर दूध चढ़ाती हूँ,
तो ये बछड़े का झूठा है।।
इसलिए पैर नही पड़ते
तेरे मंदिर आने को,
चरण शिव जी के छूने को।
अगर मैं फूल चढ़ाती हूँ तो ये
भंवरे का झूठा है।।
इसलिए पैर नही पड़ते तेरे मंदिर आने को
खड़ी हूँ दर पै दशैन को,
चरण शिव जी के छूने को।
अगर मैं फल चढ़ाती हूँ,
तो ये तोते का झूठा है।।
इसलिए पैर नही पड़ते तेरे मंदिर आनें को।

.....

हवा उड़ा के ले गयी रे मेरी मां की चुनरिया
पवन उड़ा के ले गयी रे मेरी मां की चुनरिया
उड़ के चुनरिया बरसानें में आयी।।
राधा जी के मन को भा गयी रे

मेरी मां की चुनरिया।
हवा उड़ा के ले गयी रे मेरी मां की चुनरिया
पवन उड़ा के ले गयी रे मेरी मां की चुनरिया
उड़ के चुनरिया पर्वत प आयी।।
गौरी जी के मन को भा गयी रे
मेरी मां की चुनरिया।।
हवा उ़डा के ले गयी रे मेरी मां की चुनरिया
पवन उड़ा के ले गयी रे मेरी मां की चुनरिया
उड़ के चुनरिया अयोध्या में आयी
सीता जी के मन को भा गयी रे
मेरी मां की चुनरिया।
हवा उड़ा के ले गयी रे मेरी मों की चुनरिया
पवन उड़ा के ले गयी रे मेरी मां की चुनरिया

.....

सास मोय टीका री घड़ा दे।।
पहर सखी बागड़ कू चलैगें।।
मोट–मोट सर्पो पै चलैंगे।।
सास मोय को लिए री घड़ा दे।।
पहर सखी बागड कू चलैंगे
गोड़े–गोडे रेती मै चलैंगे।
ऊंची नीची पैड़ी पै चलैंगे।।
छप्पक–छप्पक पानी मैं चलैगे।
पासल रानी–सिरियल रानी सैं मिलैंगे
सास मुझै पायल री घड़ा दै।
पहर सखी मेले री घड़ा दै।।
पहर सखी मेले कू चलैंगे।
सारी सखी मेले कू चलैगे
पांचो पाडवो सै मिलैंगे।।

.....

बागड़ के जाने वाले, बाजा बजाते जाइयो।
बाजा बजाते जाइयों, लहरा सुनाते जाइयो।।
जाने से पहले रे राजा माडी बनवाते जाइयो।

अपनी शक्ल का फोटो माड़ी पै धरते जाइयो।।
बागड़ के जाने वाले, बाजा बजाते जाइयो।
बाजा बजाते जाइयों, लहरा सुनाते जाइयो।।
सास लडेगी रे राजा, जतन बताते जाइयो।
रानी सिरियल का रै डोला पीहर पंहुचाते जाइयो।
बागड़ के जाने वाले, बाजा बजाते जाइयो।
बाजा बजाते जाइयों, लहरा सुनाते जाइयो।।

.....

भारती माता का गीत

बच्चे के जन्म के तुरन्त बाद परिवार की महिलायें '' धरती माता का गीत गाती है।
अब लै री बहू धरती माता का नाम
ये रंगिया कब आयेगें।
अब लै री बहू अपने देवी देवताओं का नाम
ये रंगिया कब आयेगें।
अब लै री बहू भूमिया बाबा का नाम
ये रंगिया कब आयेगें।
अब लै री बहू माता रानी का नाम
ये रंगिया कब आयेगें।
अब लै री बहू भूले बिसरों का नाम
ये रंगिया कब आयेगें।

.....

जच्चा गीत

जच्चा झुक–झुक दैखे पलना।।
तु चांद जैसा किस पै हुआ मेरे ललना।।
तेरे बाबा जी काले–काले
तू गोरा–गोरा नाना पै हुआ मेरे ललना।।
जच्चा झुक–झुक दैखे पलना।।
तू चांद जैसा किस पै हुआ मेरे ललना।।
तेरे ताऊजी मोट–मोटे
तू पतला–पतला मामा पै हुआ मेरे ललना।।
जच्चा झुक–झुक दैखे पलना।।

तू चांद जैसा किस पै हुआ मेरे ललना।।
तेरे चाचा जी छोटे–छोटे
तू लम्बा–लम्बा मामा पे हुआ मेरे ललना
जच्चा झुक–झुक दैखे पलना।।
तू चांद जैसा किस पै हुआ मेरे ललना।।

.....

हमें तो लूट लिया मिल के रिस्तेदारों ने
सास जिठानी ने और नन्दरानी ने।।
मैने सोचा मै सास न बुलाऊंगी
मुझे क्या मालूत वो दौड़ी चली आयेगी।।
तीयल लूट लेई नेग के बहाने से
सास जिठानी ने और नन्दरानी ने
मैने सोचा मैं जिठानी न बुलाऊंगी
मुझे क्या मालूत वो दौड़ी चली आयेगी।।
साड़ी लुट लेई नेग के बहाने से
सास जिठानी ने और नन्दरानी।
हमें तो लुट लिया मिल के रिश्तोदारों ने
सास जिठानी ने और नन्दरानी।।
मैने सोचा नन्दी न बुलाऊंगी
मुझे क्या मालूत वो दौड़ी चली आयेगी।।
हार लूट लिया हाय।
कोलिर लूट लिया हाय।
पैंडिल लूट लिया हाय।
नेग के बहाने से

.....

कमरें–कमरे मे लगा दो टेलिफोन
जज्वा से बच्चा बात करें।।
दाई आवै ललन जनावै मांगे अपना नेग।
दे दो–दे दो बलम इनका नेग
दे दो–दे दो राजा जी इनका नेग
लाल हुए भारत में।।

जिठानी आवै पंलग बिछावै मांगे अपना नेग
दे दो–दे दो बलम इनका नेग
दे दो–दे दो राजा जी इनका नेग
लाल हुए भारत में।।
नंद आवै दूधी धुलावै मांगे अपना नेग
दे दो–दे दो बलम इनका नेग
दे दो–दे दो राजा जी इनका नेग
लाल हुए भारत में।।

.....

विवाह गीत–

बैठ गये चौकी पे चढ़ के
अरी दशरथ कें राजदुलार,
गले में फूलों की माला।
हाथ में ले रहे वैद्य किताब।।
नमस्ते दादा से करके
अरी दादी के दावेदार,
गले में फूलों की माला।
हाथ में ले रहे वैद्य किताब।।
बैठ गये चौकी पे चढ़ के
अरी दशरथ कें राजदुलार,
गले में फूलों की माला।
हाथ में ले रहे वैद्य किताब।।
नमस्ते ताऊ से करके
अरी ताई के दावेदार,
गले में फूलों की माला।
हाथ में ले रहे वैद्य किताब।।
बैठ गये चौकी पे चढ़ के
अरी दशरथ कें राजदुलार,
गले में फूलों की माला।
हाथ में ले रहे वैद्य किताब।।
नमस्ते चाची से करके
अरी चाची के दावेदार,

गले में फूलों की माला।
हाथ में ले रहे वैद्य किताब।।

.....

साईकल सवारी मत करो हरियाले
पतली कमर लब खा जागी।
दादा गली मत जाइयो हरियाले,
दादी नजर लगा जागी।।
म्हारी गली आ जाइयों हरियाले
छत पर महल चिना दुगी,
महल पे झन्डा, झण्डे पे ओम लिखा दुंगी।
साईकल सवारी मत करो हरियाले
पतली कमर लब खा जागी।
ताऊ गली मत जाइयो हरियाले,
ताई नजर लगा जागी।।
म्हारी गली आ जाइयों हरियाले
छत पर महल चिना दुगी,
महल पे झन्डा, झण्डे पे ओम लिखा दुंगी।
साईकल सवारी मत करो हरियाले
पतली कमर लब खा जागी।
चाचा गली मत जाइयो हरियाले,
चाची नजर लगा जागी।।
म्हारी गली आ जाइयों हरियाले
छत पर महल चिना दुगी,
महल पे झन्डा, झण्डे पे ओम लिखा दुंगी।

.....

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्राथमिक स्त्रोत–

1. उ0प्र0 डिस्टिक्ट गजेटियर, सहारनपुर, 1915
2. ई0वी0 जोशी, उ0प्र0 डिस्टिक्ट गजेटियर, बुलन्दशहर 1924
3. जनगणना 2011
4. दैनिक जागरण समाचार पत्र 7 जून, 2011

5. हिन्दुस्तान समाचार पत्र 2 दिसम्बर, 2012
6. जबर सिंह पुत्र श्री छोटन सिंह का साक्षात्कार
7. धनबीरी देवी पत्नी धर्मपाल सिंह का साक्षात्कार
8. रविन्द्र कुमार पुत्र श्री भूले सिंह का साक्षात्कार
9. सीमा पत्नी बिजेन्द्र का साक्षात्कार
10. कमलेश पत्नी राजेश का साक्षात्कार
11. मुकेश पत्नी ब्रजवीर का साक्षात्कार
12. सावित्रि पत्नी भूले सिंह का साक्षात्कार
13. सुमन पत्नी देवेन्द्र का साक्षात्कार

द्वितीय स्त्रोत–

1. गोवर्धन राय : *भारतीय संस्कृति का पुरातात्विक आधार*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1985, पृष्ठ सं0 **142**।
2. ड़ॉ0 पूरन चन्द जोशी : *परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1987, पृष्ठ सं0 **140**।
3. ड़ॉ रामशरण शर्मा : *प्रारंभिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास,* हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली 1992, पृष्ठ सं0 **185**।
4, सत्यकेतु विद्यालंकार : *भारतीय संस्कृति का विकास*, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली 29. 2009, पृष्ठ सं0 **165**।
5. डॉ गोविन्द चालक : *संस्कृति समस्या और संभावना* तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ सं0 **170**।
6. ड़ॉ नरेन्द्र कुमार शर्मा : *भारतीय समाज एवं संस्कृति*, आख्या प्रकाशन, जयपुर सन् 2014, पृष्ठ सं0 **160**।
7. ड़ॉ विध्नेश त्यागी, कपिल कुमार : *मेरठ के पांच हजार वर्ष*, मेरठ पब्लिकेशन , मेरठ 2014, पृष्ठ सं0 **179**।
8. ड़ॉ के0के0 शर्मा : *मेरठ मण्ड़ल के पर्यटक स्थल*, दि0 मेरठ यूनिवर्सिटी हिस्ट्री एल्यूमिनी, मेरठ, 2015, पृष्ठ सं0 **155**।
9. बी0एन0 झा : *प्राचीन भारत एक रूप रेखा*, दिल्ली, 1987 पृष्ठ सं0 **188**।
10. महावीर अग्रवाल : *लोक संस्कृति अध्ययन एवं परिपेक्ष्य*, श्री प्रकाशन दुर्ग. 1996, पृष्ठ सं0 **135**।
11 ड़ॉ संतराम देशमुख विमल : *लोकनाट्य : परम्परा एवं प्रयोग*, नीरज बुक सेन्टर दिल्ली–110092, पृष्ठ सं0 **132**।
12. *हिन्दी गीत–यात्रा एवं समकालीन संदर्भ मे* : सुरेश गौतम जी का लेख–गीत को सत्ता

और अवधारणा, भावना प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ सं0 **125**।

13. राय गुलाब राय : *भारतीय संस्कृति की रूप रेखा,* लोकभारती, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश पृष्ठ सं0 **139**।
14. डॉ कृष्ण देव उपाध्याय : *लोक सहित्य की भूमिका*, भावना प्रकाशन दिल्ली
15. सुरेश चन्द : त्यागी : *लोक साहित्य* मेरठ विश्वविद्यलय हिन्दी परिषद, पृष्ठ सं0 **133**।
16. ड़ॉ वासुदेव शरण अग्रवाल : *लोक का प्रत्यक्ष दर्शन,* (निम्बन्ध) सम्मेलन पत्रिका–लोक संस्कृति विशेषांक पृ0–**65**